गुरु बिन ज्ञान नहीं

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

गुरु वह होता है, जो आत्मज्ञान देता है। **गु** अर्थात् अंधकार **रु** अर्थात् दूर करने वाला। गुरु अंधकार को दूर कर जीवन में ज्ञान का प्रकाश फैलाता है। सरस्वती ज्ञान की देवी है। सरस्वती के समक्ष ज्ञान का दीपक जलाकर अज्ञान को दूर करने का संकेत दिया जाता है। ज्ञान के बिना मानव का जीवन अधूरा है। ज्ञान ही मानव को पूर्ण मानव बनाता है। ज्ञान ही एक ऐसा तत्व है जो अन्य प्राणियों से मानव को अलग करता है। ज्ञान कैसे प्राप्त हो यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। गुरु ज्ञान का दीपक मानव के अन्दर जलाता है, जिससे मानव पूर्ण मानव बनता है। जितने भी महापुरुष हुये हैं, उनके भीतर ज्ञान का दीपक जलाने वाले कोई न कोई गुरु रहे हैं। शिवाजी को शिवाजी बनाने वाले समर्थ गुरु रामदासजी, स्वामी विवेकानन्द को विवेकानन्द बनाने वाले रामकृष्ण परमहंस थे। सरस्वती मां ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी है। उनकी आराधना से ज्ञान प्राप्त होता है। भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊंचा बताया गया है। गुरु ही ईश्वर का ज्ञान कराता है। तुलसीदासजी ने लिखा है–

बन्दहुं गुरु पद कंज, कृपा सिंधु नर रूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु वचन रविकर निकर।।

अर्थात् गुरु के चरण कमल की मैं वंदना करता हूं। मनुष्य रूप में गुरु साक्षात् ईश्वर और कृपा के सागर है। अज्ञान के अंधकार को नष्ट करने के लिए गुरु की वाणी सूर्य की किरणों के समान है। ऐसे गुरु का शतशत वंदन। प्राचीनकाल में मानव जीवन को चार भागों में विभक्त किया गया था– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। ब्रह्मचर्य आश्रम में विद्यार्थी गुरु के सान्निध्य में रहकर विद्याध्ययन कर ज्ञान प्राप्त करता था। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली थी। यह व्यवस्था बहुत ही वैज्ञानिक रीति पर आधारित थी। मानव जीवन

की आयु सौ वर्ष मानकर पच्चीस–पच्चीस वर्षों विभक्त कर दी गयी थी। इस आश्रम में शिष्य गुरु के सान्निध्य में जाकर शिक्षा प्राप्त करता था।

भारतीय शास्त्रों में कहा गया है कि ज्ञान अथवा विद्या से मुक्ति प्राप्त होती है। समाज में दो प्रकार के लोग होते हैं। एक तो वे लोग जो प्रत्येक कार्य समझकर बुद्धि से करते हैं और दूसरे वे लोग जो बिना समझे कार्य करते हैं। जो कर्म समझ कर किया जाता है वही कर्म शक्तिशाली तथा सफल होता है। मनु के अनुसार जन्म से सभी मनुष्य शूद्र उत्पन्न होते हैं, परन्तु आध्यात्मिक ज्ञान और कर्म से वे द्विज बन जाते हैं। शिक्षा मानव का सर्वांगीण विकास करती है। गुरु के आश्रम में शिष्य बौद्धिक और मानसिक अनुशासन सीखता है। मानव का जीवन ज्ञान से ही धर्म प्रवण, नैतिक मूल्यों से युक्त, उच्च आदर्शों से संवलित और बहुमुखी व्यक्तित्व से युक्त होता है। अतः धार्मिक वृत्तियों का उत्थान, चरित्र का उत्थान, व्यक्तित्व का उत्थान, सामाजिक उत्तरदायित्वों का निष्पादन और सांस्कृतिक जीवन का उत्थान शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली इस उद्देश्य को सफल करने में पूर्ण समर्थ थी।

प्राचीनकाल में मौखिक अध्यापन प्रचलित था। विद्यार्थी गुरु के सान्निध्य में रहकर शिक्षार्जन करता था। गुरु का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान था। प्राचीनकाल में गुरु और शिष्य का संबंध पिता और पुत्र जैसा था इसलिए शिष्य का यह कर्त्तव्य था कि वह गुरु के प्रति द्रोह न करे। शिष्य अथवा विद्यार्थी के लिए विद्यार्जन के प्रति निष्ठावान तथा जिज्ञासु होना आवश्यक था। गुरु उसकी जिज्ञासु प्रवृत्ति और कर्त्तव्य बुद्धि की जानकारी रखता था। प्रतिभावान और सुयोग्य शिष्य को चुनना गुरु की कुशलता का परिचायक था। गुरु की यह विशेष कुशलता होती थी कि वह मंद बुद्धि छात्र के मस्तिष्क में ज्ञान का मंत्र फूंककर उसे विद्या सम्पन्न बना दे।

गुरुकुल आश्रम में शिष्य को सात्विक प्रवृत्ति से रहना पड़ता था। शिष्य का यह कर्त्तव्य था कि वह असत्य भाषण न करे, प्रतिदिन स्नान करे, मधुमांस का सेवन न करे, दिन शयन, तेल मर्दन, क्रोध, लालच, मोह इत्यादि न करे। उसको अनेक आचार संबंधी नियम भी पालन करने पड़ते थे। शिष्य को गुरु का अनुकरण करना चाहिए, उसे स्नान करने में सहायता देनी चाहिए, उसके शरीर की सेवा करनी चाहिए, गुरु को प्रसन्न करने वाले कार्य करने चाहिए, अपने पैरों

को आगे कर गुरु के समीप नहीं बैठना चाहिए, अपने पाव नहीं फैलाना चाहिए, उच्च स्वर से गुरु के सामने बोलना नहीं चाहिए, जोर से हंसना, जँभाई लेना, अंगुली नहीं चटकाना चाहिए।

गुरु यदि शिष्य को बुलावे तो बुलाने पर तुरंत गुरु के पास जाना चाहिए, गुरु के सामने नीचे आसन पर बैठना चाहिए, गुरु के सो जाने के उपरान्त सोना और उनके जगने के पहले जगना चाहिए। शिष्य को अपने गुरु की चाल–ढ़ाल वाणी एवं क्रियाओं की नकल नहीं करनी चाहिए। गुरुकुल में विद्यार्थियों के साथ समानता का व्यवहार होता था। विद्यार्थियों के जीवन में अज्ञानरूपी अंधकार को दूर कर ज्ञानरूपी प्रकाश का फैलाव गुरु ही करता था। गुरु के सान्निध्य में अहिंसा व्रत का पालन करना पड़ता था। विनम्रता और अनुशासन का पाठ गुरु शिष्य को सिखाता था।